Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

विभिन्न समकालीन नारीवादी उपन्यासो का अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

विभिन्न समकालीन नारीवादी उपन्यासो का अध्ययन

Amdavadia Maheshbhai Chimanlal

Research Scholar, Bhagwant University, Ajmer

----------X----------

समकालीनताः

डॉ. रवीन्द्र भ्रामर ने समकालीन शब्द के तीन अर्थ दिए हैं, ''काल–विशेष से सम्बद्ध', 'व्यक्ति–विशेष के काल–यापन से सम्बद्ध और 'साहित्य, समाज अथवा प्रवृत्ति विशेष से संश्लिष्ट काल–खण्ड'। काल– विशेष की दृष्टि से 'समकालीनता' का अर्थ एक क्षण में भी सिमट सकती है। व्यक्ति विशेष की दृष्टि से 'समकालीनता' का अर्थ हुआ 'एक व्यक्ति की संपूर्ण आयु का काल–खण्ड। साहित्य के मूल्यांकन के प्रसंग में 'समकालीनता' का अर्थ किसी भी साहित्यकार के लेखन–काल में प्राप्त प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य के रूप में निर्धारित किया जा सकता है।

अंग्रेजी में 'समकालीन' शब्द के लिए 'कन्टेम्पोरेरी' ख्ववदजमउचवतंतल, अथवा 'कोंटेम्पेरेरी' शब्द प्रयुक्त है। डॉ कामिल बुल्के ने इन दोनों शब्दों को, समकालीनता के पर्याय के रूप में स्वीकारा है। ''द ऑक्सफोर्ड डिक्षनरी–तृतीय वॉल्यूम'' में कन्टेम्पोरेरी अथवा समकालीनता का अर्थ, समान समय, युग या अवधि से संबंधित अर्थात एक समय में साथ–साथ जीवन निर्वाह करते अस्तित्ववान होने या घटित होने से लगाया गया है।

समकालीन शब्द के अर्थ विवेचन के बाद इस शब्द के सामान्य अर्थ अपने समय का होना', 'एक ही समय में होने या रहने वाला' आदि रूपों में ग्रहण किया जा सकता है।

समकालीनता–व्याख्या एवं परिभाषाः

'समकालीनता' शब्द की अवधारणा विवाद का विषय है। इस शब्द को विभिन्न प्रकारों से परिभाषित करने का प्रयास विद्वानों ने किया है। कभी मूल्यों कभी विशेष प्रवृत्तियों और कभी कालवाची अवधारणाओं से जोड़कर इस शब्द की व्याख्या और परिभाषा देने का प्रयास समय–समय पर होता आया है। 'समकालीन' शब्द की सही धारणा ग्रहण करने के लिए विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं और व्याख्यावों पर दृष्टि डालना समीचीन होगा।

''समकालीन साहित्य पर विचार करते समय आरंभ में ही मूलभूत प्रश्न यह उभर कर आता है कि समकालीन और आधुनिक के बीच अंतर क्या है, या कि ये दोनों पद समानार्थक हैं? उत्तर में कहना होगा कि 'समकालीन' पद सिर्फ काल बोधक है, जब कि 'आधुनिक' कालबोधक के अतिरिक्त मूल्यबोधक भी। समकालीन अपने शाब्दिक अर्थ में स्पष्ट है – वक्ता या कि लेखक के समय का जीवन, समाज, साहित्य–जो भी अभिप्रेत हो। आधुनिक की व्याख्या अपेक्षित है, जहाँ पहले अर्थ के अन्तर्गत तो समकालीनता का बोध होता है, पर उसके आगे पद का विशिष्ट और निजी अर्थ आता है।''

स्पष्ट है प्रस्तुत अर्थ का संबंध मूल्यबोध से है।

समकालीन और समकालीनता शब्दों की व्याख्या करते हुए मृदुल जोशी लिखती हैं –

''समकालीन शब्द विशेषण है और समकालीनता भाववाचक संज्ञा है। किसी व्यक्ति के समय या किसी काल–खण्ड में प्रचलित या व्याप्त प्रवृत्तियों या स्थितियों को उस व्यक्ति के समकालीन माना जा सकता है और इन प्रवृत्तियों एवं स्थितियों के होने का भाव समकालीनता है।''

डॉ. जयप्रकाश शर्मा समकालीनता को एक काल–निरपेक्ष शब्द मानता है। उनके अनुसार समकालीन होने का मतलब समयहीन होना भी है। वे लिखते हैं – ''समकालीनता'' एक का निरपेक्ष शब्द है। प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग जीवन का साक्षी और समकालीन रहा होगा। इसलिए समकालीन युग–संदर्भ की भावना नहीं हो सकती। समकालीनता का सामान्य अर्थ वर्तमान से अथवा गत दो–तीन दशकों से लें तो भी प्रश्न उठता है कि ऐसा कौनसा परिवर्तन चक्र चला कि इस साहित्य को समकालीन की संज्ञा दे दी गई? वास्तव में समकालीन होना समयहीन होना भी है।''

सुरेशचन्द्र के विचार में 'समयकालीनता' काल सापेक्ष है। ये लिखते हैं – ''स्वरूपतः समकालीनता काल सापेक्ष है। इसलिए समाकालीनता को काल की सीमाओं में रहते हुए ही परिभाषित किया जा सकता है। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से मानव मूल्य और सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन ला देने वाली घटनाओं से विलगित कालावधि विशेष के अन्तर्गत घटित या प्रत्ययों को उस अवधि की सीमा में आने वाले अन्य प्रत्ययों का समकालीन कहा जाता है।''

समकालीनता आधुनिकता का विस्तार है। समकालीनता का अर्थ मात्र कालबोध से संबंधित है पर आधुनिकता एक साथ कालबोधक और मूल्यबोधक दोनों है। इस संबंध में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं –

डॉ. रामकली सराफ के अनुसार आधुनिकता की तरह समकालीनता भी मूल्य–बोध से अभिन्न रूप से जुड़ी है। उनका विचार है, ''अनिवार्यतः समकालीनता आधुनिकता की तरह ही मूल्य–बोध से अभिन्न रूप से जुड़ी है। समकालिक रचनाशीलता वर्तमान को इतिहास–निरपेक्ष ढंग से न देखकर इतिहास–बोध से जोड़कर अर्थात भविष्योन्मुख दृष्टि से देखती है।''

www.ignited.in

डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय 'समकालीनता' का अभिधार्थ – 'जो इस काल में है।'– का निराकरण करते हुए कहते हैं –

''समकालीनता, एक काल में साथ–साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का 'मुकाबला' करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी, केंद्रीय महत्तव रखने वाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है।''

नारीवादी उपन्यासों में परिवारः

परिवारः

समाज की आधारभूत इकाइयों में परिवार का सबसे अहम है। सभ्यता की शुरूआती दौर में भोजन और खेती की सुविधा के लिए लोग एकजुट होकर रहने लगे। वस्तुतः इससे ही परिवार नामक संस्था का निर्माण हुआ। दरअसल परिवार का निर्माण स्त्री और पुरूष के सह–अस्तित्व और समानता से होता है। सभ्यता के आरंभिक दौर में परिवार मातृसत्तात्मक थे। किन्तु धीरे–धीरे वह पितृसत्तात्मक में परिवर्तित हो गए। फलस्वरूप इसके स्त्री की स्वतंत्रता और अस्तित्व संकट में पड़ गए। परिवारों में स्त्री पुरूष के अधीनस्थ हो गयी। सुरक्षा के नाम पर नारियाँ घरों के अंदर बंदी बनायीं गयीं। राहिला रईस के शब्दों में, "स्त्री और पुरूष के विकास के लिए निर्मित यह संस्था अंततः स्त्री के लिए पिंजरे में ही परिवर्तित हो गयी। परिवार की चारदीवारी के भीतर स्त्री की स्वतंत्रता, उसके सपने, उसकी आकांक्षाएँ सब कैद हो गयीं। स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व ही समाप्त हो गया, यहाँ तक कि उसका अपना नाम तक नहीं बचा।"

समकालीन नारीवादी उपन्यास और परिवारः

हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यासों में स्त्री का रूप परिवार के प्रसंग में ही अधिक चित्रित है। पुरूष उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी के परंपरागत रूप ही चित्रण होता था। इस दौर की महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में भी नारी का चित्रण पितृसत्तात्मक मूल्यों के अनुरूप ही होता था। किन्तु समकालीन महिला उपन्यासकारों के नारी संबंधी दृष्टिकोण में पर्याप्त अंतर है। उन्होंने पहचान लिया कि नारी के शोषण का आरंभ परिवार से ही होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचिः

अध्ययन के लिए चयनित उपन्यास

1. आवाँ चित्रा मुद्गल सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1999
2. तत्–सम राजी सेठ राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1998
3. शाल्मली नासिरा शर्मा किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 1987
4. एक जमीन अपनी चित्रा मुद्गल प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1990
5. माई गीतांजली श्री राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1993
6. दिलो–दानिश कृष्णा सोबती राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1993
7. झूला नट मैत्रेयी पुष्पा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1999
8. चाक मैत्रेयी पुष्पा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1997
9. अन्तर्वंशी उषा प्रियंवदा वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2000
10. इदन्नमम मैत्रेयी पुष्पा किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 2008
11. ठीकरे की मंगनी नासिरा शर्मा किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 1996
12. पीली आँधी प्रभा खेतान लोकभारती प्रकाशन, ईलाहाबाद संस्करण – 1996
13. छिन्नमस्ता प्रभा खेतान राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1993
14. सात नदियाँ एक समंदर नासिरा शर्मा प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1995
15. आओ पेपे घर चलें प्रभा खेतान सरस्वती विहार, दिल्ली संस्करण – 1990
16. एक पत्नी के नोट्स ममता कालिया किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 1997
17. कठगुलाब मृदुला गर्ग भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली संस्करण – 1998
18. समय सरगम कृष्णा सोबती राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2000
19. बेतवा बहती रही मैत्रेयी पुष्पा किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 1994
20. स्मृति दंश मैत्रेयी पुष्पा किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 1990
21. ऐ लड़की कृष्णा सोबती राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1991
22. अकेला पलाश मेहरून्निसा परवेज वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2002
23. मैं और मैं मृदुला गर्ग नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली संस्करण – 1984
24. शेष यात्रा उषा प्रियंवदा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1984
25. अल्मा कबूतरी मैत्रेयी पुष्पा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2000

26. अपने–अपने चेहरे प्रभा खेतान किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 1996

27. अतीत होती सदी राजेंद्र यादव, अर्चना वर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2001 और स्त्री का भविष्य

28. हिन्दी उपन्यास की दिशाएँ डॉ. वेदप्रकाश अमिताब गोविंद प्रकाशन, मथुरा(उ.प्र.) संस्करण – 2003

29. उपन्यास की संस्करण्रचना प्रो. गोपाल राय राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2006

30. उपन्यासः स्वरूप और संवेदना राजेंद यादव वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1997

31. समकालीन हिन्दी उपन्यास डॉ. प्रतिभा पाठक हिमालय पुस्तक भण्डार–नई दिल्ली संस्करण – 1992 की आधुनिकता

32. हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा रामदरश मिश्र राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1968

33. उपन्यास का पुनर्जन्म परमानंद श्रीवास्तव वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1995

34. उपन्यास की शर्त जगदीश नारायण श्री वास्तव किताब घर, नई दिल्ली संस्करण – 1993

35. नये उपन्यासों में नए प्रयोग डॉ. दंगल झालटे प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1994

36. महादेवी साहित्य समग्र –3 निर्मला जैन वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 2000

37. हिन्दी उपन्यासः समकालीन विमर्श डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी अमन प्रकाशन, कानपुर संस्करण – 2000

38. भारतीय नारी अस्मिता की पहचान उमा शुक्ला लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण – 1994

39. समकालीन साहित्य चिन्तन डॉ. रामदरश मिश्र, डॉ. महीप सिंह ज्ञान गंगा, दिल्ली संस्करण – 1995

40. विज्ञापन की दुनिया कुमुद शर्मा प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली संस्करण – 2004